भूमंडलीकरण के दौर में ग्रामीण आर्थिक विकास में महिलाओं का योगदान एवं उसके समक्ष चुनौतियाँ

डॉ. सुरेन्द्र यादव

भारत पुरूष प्रधान देश है लेकिन देश के गौरव को ऊँचा उठाने एवं पुरूषों को सम्मान जनक स्थान दिलाने में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वैदिक युग से आज तक के बदलते परिवेश में महिलाओं ने समाज एवं परिवार के प्रबंधक और विकास में अपनी सकारात्मक भागीदारी सिद्ध की है। वैसे भी किसी राष्ट्र, राज्य एवं समुदाय के सत्त विकास एवं उन्नति के लिए प्रत्येक वर्ग धर्म, लिंग, तथा स्तर के लोगों की सक्रिय भागीदारी तथा किये गए कार्य के परिणाम स्वरूप लाभों का न्यायिक एवं अनुपातिक वितरण अति आवश्यक है। महिलाएँ ग्रामीण आर्थिक विकास एवं राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में अहम भूमिका निभा रही है। राष्ट्रीय एवं अन्तर राष्ट्रीय स्तर पर भी इस बात को स्वीकार किया जा रही है। आज महिलाएँ हर क्षेत्र में पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही है। चाहे वह कृषि का क्षेत्र हो या उद्योग धंधो का कोई भी ऐसा जगह नही है जहाँ महिलाओं ने अपनी कामयाबी की बुलंदियों को नही छुआ। महिलाओं के सक्रिय होने और उनके आगे बढ़ने से उनमे आत्म विश्वास भी आया है। उनमें आगे बढ़ने की इच्छा प्रबल हो गई है लेकिन आज भी हमारे समाज में ऐसी कई महिलाएँ है जो हर तरह से योग्य होने के बावजूद अधिक उचाई तक नहीं पहुँच पाई।